

सिद्ध शाबर मन्त्र : 165

जलन

मन्त्र :

ॐ नमों आदेश गुरु को । कामरु देश कामाख्या देवी ।
जले तेल रेल तेव महा तीरे । अमुक¹ लहर पील मल में कारे ।
मन्त्र पढ़े नरसिंहं देव कुटिया में बैठके । श्री रामचन्द्र रहि रहि फूँक
के । जाय अमुक की जलन । एक एलन में जाय ।
खाय सागर की नोर नान में । आज्ञा हाड़ि दासी की ।
फुरो मन्त्र चण्डी वाचा ।

विधि : यदि कोई जल गया हो तो सरसों का तेल लेकर इस मन्त्र
से शक्तिकृत करके जले हुए स्थान पर लगा दे तो जलन ठीक हो
जाती है ।

1. अमुक की जगह पीड़ित का नाम लें ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 166

अखाड़ा स्तम्भन

मन्त्र :

ॐ नमो आदेश कामरु कामाक्षा देवी को। अंग पहनूँ भुजंग पहनूँ।
पहनूँ लोह शरीर। आनते के हाथ तोड़ू।
चलते के पाँव तोड़ूँ। सहाय हो हनुमन्त वीर।
उठ अब नरसिंह वीर। तेरो सोलहा सौ श्रंगार।
मेरी पीठ लागे नहीं वीर। हो तेरी हार तो हनुमन्त वीर लज्जाने।
तूँ लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिंदूर। अपनी बेह।
सकल मोही कर देहु। मेरी भक्ति। गुरु की शक्ति।
फुरे मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधि : हनुमान जी की पूजा देकर तेल का दीपक जलायें और सम्मुख लंगोट रखकर इस मंत्र का पाठ करें। आवश्यकता के समय सरसों के तेल को 108 बार इस मन्त्र कर मालिश करें और यही लंगोट पहनकर अखाड़े में उतरें तो सभी का स्तम्भन होकर विजयश्री मिलेगी।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 167

मोच

मन्त्र :

ॐ नमों आदेश गुरु को ।
श्री राम को मचक उड़ाई ।
इसके तन से तुरन्त पीर भागि जाई ।
न रहे राग पीड़ा फूँक से हुई सब पानी ।
अमुक की व्यथा छोड़ भाग तूँ मचकानी ।
न भागे पीड़ा तो महादेव की दुहाई ।
आदेश सिया राम लखन गुसाँई ।

विधि : प्रायः पाँव आदि में मोच आ जाती है इसके कारण बहुत व्यथा होती है तथा चलना—फिरना कठिन हो जाता है। ऐसे रोगी की सेवा करने के लिए सरसों का तेल लेकर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके मोच के ऊपर मालिश करें पीड़ा स्तंभित होकर मोच ठीक हो जाती है।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 168

घाव

मन्त्र :

ॐ नमो आदेश कामाख्या देवी का ।
काली बैठी लिए कटारी ।
जिसे देख दुष्ट भयकारी ।
कटारी गुण तोरे बलिहारी जाई ।
कटारी के बन्दन से घाव सुखाई ।
अमुक की पीड़ा ।
माँ काली के वरदान से र रहे ।
विहड़वन बस लुकान ।
आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई फिरै ।

विधि : देह में लगे घाव को ठीक करने के लिए किसी कटोरी में जल लेकर इसे इस मन्त्र से शक्तिकृत करके रोगी के छींटे मारें तथा पिलाये तो घाव का रक्तस्राव रुके और पीड़ित व्यक्ति सुख की अनुभूति करे ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 169

ततैया दंश स्तम्भन मन्त्र :

चूण चूण चूण विषेरपाणी । हाडेर मितर भासरे कूंडे । मर विष तुई
चूणे पूड़े । विधि : जिस जगह पर ततैया काट ले वहाँ पर इस मन्त्र
को जपते हुए फूंक मारने से विष स्तम्भित होकर देह निरोग हो
जाती है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 170 बिच्छु दंश स्तम्भन

मन्त्र :

परवत ऊपर सुरही गाई । ते करे गोबरे बीछी बिआई ।

छः कारी । छः गोरी । छः को जोता उतारिकै ।

विधा विछिठा वहिया । आठि गाठि नव पोर ।

बीछी करे अजोर । बलि चलु चलाई ।

करवाऊ ईश्वर महादेव के दुहाई । जहाँ गुरु के पाँव सरके ।

तहदि गुरु के कुश कजुरी । तहदि विष्णुपुरी निर्माजाई कै दुहाई ।

महादेव गुरु के ठावहिं ठाव बीछी पार्वती ।

विधि : इस मन्त्र का जाप करते हुए झाड़ा करने से बिच्छू का काटा
हुआ रोगी ठीक हो जाता है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 171

सर्प दंश पर धागा मन्त्र :

तागा तागा तागा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ।

तिन देव लागा । ऐ तागा नडे चढ़े । ईश्वरी करतार करे ।

विधि : जब किसी व्यक्ति को सर्प काट लेता है तो दंश के स्थान के पास धागा बाँधते हैं ताकि विष आगे न बढ़े । इस धागे को इस मन्त्र से शक्तिकृत करके बाँधने से विष का स्तम्भन हो जाता है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 172

शस्त्र बन्धन मन्त्र :

बाँधो तूपक ।

अवनि वार न धरे ।

चोट न परे घाऊ ।

रक्षा करे श्री गोरञ्ज राऊ

विधि : इस मन्त्र को सात बार जप कर अपनी समूची देह पर हाथ फिरायें और पदार्पण करें तो कहीं पर भी शस्त्र से घाव या चोट न लगेगी ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 173

लंगोट की गांठ

मन्त्र :

ॐ अजर कर बजर कर । जिर को बन्ध कर : तलै धरती ।
ऊपर सिंधु । श्यामसुन्दर दो बाला । सात समुन्द्र एक प्याला ।
चौंसठ योगिनी । कुमार कटका करे । सत की लंगोटी ।
सन्तोष का धागा । मूँज की आड़बन्ध । कमर सों लागा ।
नाग पहिरे नागमणि । हनुमान पहिरे लाल लंगोट ।
बाल गोपाल पहिरे कोपीन । नवनाथ चौरास सिद्धन की ओट ।
पवन से डरे तो अग्नि की आन । खिसक जाये तो पृथ्वी की आन ।
चूक जाए तो लक्ष्मण यती की आन ।

विधि : लंगोट पहनकर गांठ लगाते समय इस मन्त्र का जाप कर देने से लंगोट गिरता नहीं है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 174

सूअर चूहा

मन्त्र :

हनिवन्त धावति ।

उदरहि ल्यावे बाँधि ।

अब खेत खाय सूअर ।

घरमा रहे मूस ।

खेत घर छाँड़ि बाहर भूमि जाई ।

दोहाई हनुमान कै ।

जो अब खेत मंह सूअर, घर महं मूस जाई ।

विधि : एक हल्दी का टुकड़ा लें जिसमें पाँच गांठें हो । इसके साथ ही चावल ले लें । स्नान करें और फिर इस सामग्री को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सूअर—चूहे के आने वाले स्थान पर डाल दें तो सूअर तथा चूहे पुनः पदार्पण नहीं करते ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 175

बाघ

मन्त्र :

बैठी बैड़ा कहाँ चलयौ । पूर्व देश चलयौ । आंखि बाँध्यौ ।
तीनों कान बाँधौ । तीनों मुंह बाँधौ । मुंह केत जिह्वा बाँधौ ।
अधौ डांड बाँधौ । चारिउ गोड़ बाँधौ । तेरी पोंछि बाँधौ ।
न बाँधौ तो मेरी आन । गुरु की आन । वज्र डांड बाँधौ ।
दोहाई महादेव पार्वती के ।

विधि : यात्रा के समय किसी वन में विश्राम करने की आवश्यकता हो तो सिद्धि कर रहे हो तब चार कंकड़ लेकर इस मन्त्र से 7 बार फंक कर अपने चारों तरफ रखकर कार्यक्रम करें तो बाघादि का भय न होगा ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 176

विष

मन्त्र :

थाला पड़ि धूल पड़ि ।

धां धीं वलिये ।

अमुकेर अंगेर विष पाला उड़िये ।

थाला पड़ि धूल पड़ि ।

धां धीं स्वाहा ।

अमुकेर अंगे विष लागे तलगै थारूगा ।

कार आज्ञा कंसासुर नृ पितर आज्ञै ।

धनपति स्वाहा ।

विधि : एक काँसे की स्वच्छ थाली लेकर यह मन्त्र 9 बार पढ़कर थाली को फूंक मारें और फिर सर्प के विष वाले व्यक्ति की पीठ पर लगा दे तो जब तक देह में विष रहेगा तब तक वह थाली चिपकी रहेगी ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 177

गर्भ रक्षा

मन्त्र :

ॐ नमो थाथो मोथो ।
मेरा कहा कीजिए ।
अमुक का गर्भ ।
जाते राखि लीजिए ।
गुरु की शक्ति ।
मेरी भक्ति ।
फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

विधि : कीदृशी नामक राक्षसी के लिए पूजा रखकर काले रंग का धागा लेकर इस मन्त्र से शक्तिकृत करके गर्भवती की कमर में पहनाने से गिर रहा गर्भ रुक जाता है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 178

हिंसक जीव-जन्तु

मन्त्र :

फकीर चले परदेश को ।

कुत्तक मन में भावे ।

बाघ बाँधूं ।

बघाईन बाँधूं ।

बाघ के सातों बच्चा बाँधूं ।

सापां चोरां बाँधूं ।

दाँत बंधाऊं ।

बाट बाँध देऊं ।

दुहाई लोना चमारी की ।

विधि : इस मन्त्र को पढ़कर चारों तरफ फूंक मारने से हिंसक जीव-जन्तुओं से रक्षा होती है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 179

सर्प विष पर थप्पड़

मन्त्र :

धर पटकि ।

धसनि धसनि सार ।

ऊपरे धसानि ।

विष नीचे जाये ।

काहे विष तूँझतना रिसाये ।

क्रोध तो तोर नहीं पानी ।

हमरे थाप्पड़ तोर नहीं ठिकानी ।

आज्ञा देवी मनसा माता की ।

विषहरी राई की दुहाई ।

विधि : सर्प काटने पर जो व्यक्ति ओझा को बुलाने आये तो सर्वप्रथम यह मन्त्र पढ़कर उसे थप्पड़ मार दे क्योंकि इसके प्रभाव से रोगी का विष स्तम्भित हो जाता है ।

उच्चाटन कर्म . इस अध्याय में विभिन्न समस्याओं के
विदान हेतु विचित्र उच्चटन प्रयोग बताए गये हैं।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 180 विचित्र शत्रु उच्चाटन
मन्त्र :

ॐ हस्त अली हस्तों का सरदार। लगी पुकार। करो स्वीकार।
हस्त अली। तेरी फौज चली। भूत प्रेतों में मची खलबली।
हस्त अली। मेरे हाथों के साथ। तेरे भूत प्रेत।
मरें मेरी सत्ता स्वीकार। पाक हस्त की सवारी।
तड़पता हुआ भागे। जब मैंने चोट मारी।
आकाश की ऊंचाईयों में। धरती की गहराईयों में।
लेना तू खोज खबर। सब पर जाये तेरी नजर।
इन हाथों पर कौन बसे। नाहर सिंह वीर बसे।
जाग जाग रे नाहरा। हस्त अली की आन चली।
मारूँ जब भी मैं चोट। भूत प्रेत किये कराये लगे लगाये।
अला बला की खोट। जादू गूड़िया। मन्त्र की पुड़िया।
श्मशान की खाक। मुर्दे की राख। सभी दोष हो जाएँ खाक।
मन्त्र साँचा। पिण्ड काँचा। फूरे मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधि : इस प्रयोग के कारण हाथों की माया सिद्ध होती है।
सूर्यग्रहण के पूरे पर्वकाल तथा उसकी ही रात्रि को अपने समक्ष
लोबान सुलगाकर चमेली के पुष्प रखें फिर इस मन्त्र को निरन्तर
जपें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

इसके लाभार्थ अपने हाथ को इस मन्त्र से शक्तिकृत
करके किसी को भी मारने से उसके दोषों का उच्चाटन हो जाता
है। इस हाथ से किये गये समस्त कार्य सफल हुआ करते हैं।

शत्रु को यह हाथ छुआने से सर्वप्रथम शत्रुता का नाश
होता है यदि किसी कारण शत्रुता की जड़ें गहरी हों तो शत्रु का
उच्चाटन हो जाता है।

सिद्धिप्रद उच्चाटन मन्त्र :

ॐ नमो आदेश गुरु को। सिद्धि, सिद्ध करे सिद्धाई।
कभी न होवे जग हंसाई। सिद्धि मेरी है रखवाली।
सिद्धि है आसन। सिद्धि है बासन। सिद्धि है ताला। सिद्धि है चाबी।
सिद्धि से मैं काम चलाऊं। भर कर प्याला खून पिलाऊं।
रक्त का टीका। सिद्धि का वासी। मुझसे भागे सारे पुरवासी।
जो मैं चाहूँ बाण चलाऊं। बिना तीर कमान के मैं काम चलाऊं।
मेरा मारा ऐसा भागे। बिन कृपा मेरी। वह कभी न छूटे। सिद्धि का
चक्र मैंने चलाया। जिसको चाहा उसे मरवाया। मेरा चक्र न चले
तो। नव नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई। माता वैष्णवी की दुहाई।
काशी कोतवाल भैरों की दुहाई। मन्त्र साँचा। पिण्ड काँचा।
फुरे मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधि : इस मन्त्र को नवरात्रि को नवों रात में पूर्णतः नग्न होकर
रात भर निरंतर जपने से यह मंत्र सिद्ध हो जाया करता है।

जब आवश्यकता हो इसका प्रयोग करें। प्रयोग के समय
जिस काम का चिन्तन करते हैं वही काम सफल हुआ करता है।

उच्चाटन के लिए काले उड़द 21 बार शक्तिकृत करके
मारने से उच्चाटन होता है।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 182

शत्रु उच्चाटन

मन्त्र :

ॐ एक ही आदि है जग धारा । सदा स्मरण करूं ओंकारा ।
औमकार से मैं काम चलाऊं । ठहरे पर्वत मैं हिलाऊं
ओमकार से उपजी वायु । वायु का बेटा है हनुमान ।
तेरा हूं मैं एक ही दासा । सदा रहो रघुवर के पासा ।
पान बीड़ा तुझे चढाऊं । देववत्त को मैं भगाऊं ।
मेरा भागा न भगे । रामचन्द्र की दुहाई ।
सीता सत्यवती की दुहाई । लक्ष्मण यती की दुहाई ।
गौरा पार्वती की दुहाई । मन्त्र साँचा । पिण्ड काँचा ।
फुरे मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

विधि : सर्वप्रथम राम नवमी वाले दिन हनुमान जी को सिद्धि के लिए पूजा प्रदान करें तदुपरांत उसे एक हजार बार नित्य पढ़ें । यह प्रयोग चालीस दिन तक लगातार करें । संयम से रहें । भय न खायें ।

जब यह मन्त्र सिद्ध हो जाये तब काले उड़द इससे शक्तिकृत करके मारने से शत्रु का उच्चाटन होता है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 183

काला उच्चाटन

मन्त्र :

सफेद कबूतर । काले कबूतर । काट काट के मैं चढ़ाता ।
काली के बेटे तूझे बुलाता । लौंग सुपारी ध्वजा नारियल ।
मदिरा की मैं भेंट चढ़ाता । काली विद्या मैं चलाता ।
बावन भैरों चौंसठ योगिनी । बने इस काज सहयोगिनी ।
ॐ नमो आदेश, आदेशख आदेश ।

विधि : खतरनाक प्रयोगों में सबसे खतरनाक प्रयोग यही है ।

इसे कालरात्रि के समय सूर्योदय तक लगातार जपें फिर होली वाले दिन श्मशान में जाकर काला कबूतर काटकर डाल दें । दीपावली की रात को फिर इसे लगातार पढ़ें तत्पश्चात् सफेद कबूतर काट कर उसका पंजा अपने पास रखकर शेष श्मशान में छोड़ दें । अब किसी भी शनिवार को जब चतुर्दशी तथा कृष्ण पक्ष हो, श्मशान में जाकर जलती हुई चिता के समक्ष बैठ इसे लगातार जपें । भोर होते ही उसकी राख लेकर प्रस्थान करें । यह राख इस मन्त्र से शक्तिकृत करके जिसे छुवा देंगे उसका तत्काल उच्चाटन होता है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 184

मसानी उच्चाटन

मन्त्र :

कालिन नागिन । शिर जटा । ब्रह्मा खोपड़ी हाथ । मरी मसानी ।

न फिरे । गुरु हमारे साथ । दुहाई ईश्वर महादेव ।

गौरा पार्वती की । दुहाई नैना योगिनी की ।

विधि : इस मन्त्र को सर्वप्रथम किसी ग्रहण काल के पूरे पर्व में लगातार जपते हुए अपने अनुकूल कर लें तदुपरान्त प्रयोग करें ।

श्मशान की राख लाकर उसे किसी मन्त्र से या किसी क्रूर योग वाले दिन बिना मन्त्र के ही किसी को खिला देने से खाने वाले को मसानी रोग हो जाता है । जो व्यक्ति इस रोग का शिकार होता है वह प्रायः गुमसुम रहता है तथा प्रतिदिन सूखता चला जाता है वह भयानक प्रयोग प्रायः स्त्रियों के प्रति किया करते हैं ।

आपके पास जब इस रोग से पीड़ित व्यक्ति आये तब आप गाय के उपले की राख को कपड़े से छानकर रख लें तथा इस मन्त्र से 21 बार अभिमंत्रित करके मसानी के रोगी को खिला दें तथा पेट पर लगा दें । ऐसा तीन बार करने से मसानी का उच्चाटन हो जाता है ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 185

भूतादिक उच्चाटन मन्त्र :

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय । अतुल वीर पराक्रमाय ।
घोर रौद्र महिषासुर रूपायै । त्रैलोक्य डम्बराय । रौद्र क्षेत्र पालाय ।
हीं हीं क्रीं क्रीं । क्रमितताडय ताडय । मोहय मोहय द्रुमि द्रुमि ।
क्षोभय क्षोभय आभि आभि । साधय साधय हीं हृदये ।
आशक्तय प्रीति ललाटे बन्ध । यही हृदये स्तम्भय स्तम्भय ।
थकलि किलि । ईं हीं डाकिनीं । प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनीं ।
प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं । प्रच्छादय प्रच्छादय अभूति अदूति स्वाहा ।
राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय । ब्रह्म राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ।
आकाशं प्रच्छादय प्रच्छादय । सिंहिनी पुत्रम् प्रच्छादय प्रच्छादय ।
ऐते डाकिनी ग्रहं साधय साधय । शाकिनी ग्रहं साधय साधय ।
अनेन मन्त्रेण । डाकिनी शाकिनी । भूत प्रेत पिशाचादि ।
एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक । चातुर्थिक पंचमिक । वाविक पैत्तिक
श्लेष्मिक । सन्निपात केसरी । डाकिनी ग्रहादि । मुञ्क मुञ्क स्वहा ।
मेरी भक्ति । गुरु की शक्ति । फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

विधि : यह एक अत्यधिक तीव्र गति का समस्त दोषादि को उच्चाटित करने वाल संस्कृत, बंगला तथा हिन्दी के शब्दों से युक्त शक्तिशाली मन्त्र है । इससे लाभ उठाने के लिए किसी छप्पर का पानी लेना होगा । इस पानी को इस मन्त्र से 21 बार पढ़कर रोगी को मारने के समस्त रहस्यमयी बिमारी के कारणों का उच्चाटन हो जाता है ।

किसी रोगी की दयनीय अवस्था देखकर उपरोक्त जल के अभाव में मोर के पंख या लोहे के चाकू से उसका इस मन्त्र का 21 बार पढ़ते हुए झाड़ा कर दें ।